संख्या-2142/69-1-1998

प्रेषक,

श्री सुबोध नाथ झा,
प्रमुख सचिव,
उ.प्र. शासन।

सेवा में,

जिलाधिकारी/अध्यक्ष,
जिला नगरीय विकास अभिकरण,
समस्त जनपद, उ.प्र.।

लखनऊः दिनांक, 03 नवम्बर, 1998

नगरीय रोजगार एवं
गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम
अनुभाग

विषय : **स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना एवं राष्ट्रीय मलिन बस्ती सुधार कार्यक्रम योजनान्तर्गत प्रशिक्षण के स्थल/व्यय विषयक।**

महोदय,

स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना एवं राष्ट्रीय मलिन बस्ती सुधार कार्यक्रम योजनाओं का संचालन नगरीय गरीबों तथा मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों को मूलभूत सुविधायें उपलब्ध कराने हेतु संचालित की जाती है। इन योजनाओं के अन्तर्गत नगरीय निर्धनों का विशेषकर महिलाओं को, विभिन्न व्यवसायों/लघु उद्योगों में प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार में लगाये जाने की परिकल्पना है, चूँकि नगरीय निर्धन लाभार्थियों का चयन सामुदायिक विकास समितियाँ (सी.डी.एस.) करती हैं, यह सी.डी.एस. समस्त नगरीय क्षेत्र तक फैली हुई है। अतः व्यावहारिक दृष्टि से उन महिलाओं को जनपद मुख्यालयों पर एकत्र कर प्रशिक्षण देना ही श्रम-साध्य होगा। सम्भावित कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुए यह उचित समझा गया कि गैर सरकारी संस्थायें जो प्रशिक्षण के संसाधनों से युक्त है, उन्हें ही मलिन बस्तियों में जाकर महिलाओं तथा शहरी गरीबों को प्रशिक्षण देने का कार्यभार सौंपा जाय। मलिन बस्ती में रहने वाली निर्धन महिलाओं को एकत्रित कर प्रशिक्षण हेतु दूरस्थ भेजना कितना कठिन एवं अव्यवहारिक होगा। प्रकरण में अत्यन्त विलम्ब हो चुका है अभी तक जनपदों में प्रशिक्षण का कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है जिसके फलस्वरूप महिलाओं को प्रशिक्षण हेतु स्वरोजगार में लगाना दुष्कर होगा।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि कुशल एवं सक्षम गैर सरकारी संस्थाएं जिन्हें इस विभाग के कार्यक्रमों की जानकारी हो को ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों को चलाने हेतु आदेशित किया जाय। और कृत कार्यवाही से शासन को अवगत कराया जाय।

इसके अतिरिकत मुझे यह भी कहने का निदेश हुआ है कि डूडा जिला नगरीय विकास अभिकरण की धनराशि योजनाओं के अनुरूप ही व्यय की जाय जिसके लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा निदेशित किया गया है। अन्यत्र व्यय करने से गम्भीर वित्तीय अनियमितता होगी तथा योजनाओं से हटकर व्यय करने से आडिट आपत्तियाँ की सम्भावना प्रबल होगी। व्यक्तिगत रूप से यह सुनिश्चित कर लें कि जिसके लिए और जहाँ के लिए धनराशि आवंटित हो वहीं पर धनराशि का सदुपयोग सुनिश्चित किया जाय।

भवदीय,

(सुबोध नाथ झा)
प्रमुख सचिव।